सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 55 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार, 29 मार्च, 2022
मूल्य ₹ 3/-

डिप्टी सीएम बृजेश

कहते हैं कि धर्म के बिना इंसान लगाम के बिना घोड़े की तरह है।
-सर्वपल्ली राधाकृष्णन

पाठक ने संभाला... 8 | करारी हार से हैरान मायावती अब... 3 | ट्रक ने बाइक को मारी टक्कर पिता... 7

अरविंद शर्मा के बढ़े कद ने बता दिया अब यूपी की कमान रहेगी दिल्ली के हाथ में

योगी मंत्रिमंडल को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं

» भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे महेन्द्र प्रताप सिंह को किसी कीमत पर मंत्री बनाने को तैयार नहीं हुआ दिल्ली दरबार

केशव को महत्वहीन और स्वतंत्र देव को महत्वपूर्ण विभाग दिलवाकर सीएम योगी को भी खुश करने की कोशिश

संजय शर्मा

लखनऊ। योगी सरकार के मंत्रियों के कामकाज के बंटवारे ने सभी को चौंका दिया। अरविंद शर्मा और जितिन प्रसाद का बढ़ा हुआ कद बता रहा है कि इस प्लान में अधिकांश दिल्ली की ही चली है। यह बात दीगर है कि स्वतंत्र देव सिंह को ताकतवर मंत्रालय दिलाकर और केशव मौर्य को कम महत्व का मंत्रालय दिलवा कर सीएम योगी ने अपना भी रुतबा दिखाने की कोशिश की है मगर दोनों डिप्टी सीएम योगी की पसंद के नहीं है तो 2024 से पहले संतुलन बनाये रखना दिल्ली दरबार और यूपी दरबार के लिये आसान नहीं होगा।

» अरविंद शर्मा, जितिन प्रसाद और बृजेश पाठक को माना जाता है दिल्ली दरबार का करीबी

आज छह बजे देखिये ज्वलंत विषय पर चर्चा हमारे यू ट्यूब चैनल 4PM News Network पर

पिछले लगभग एक साल से भाजपा की राजनीति में दिल्ली और यूपी के बीच शीतयुद्ध की चर्चा सुर्खियों में बनी हुई थी। यह विवाद तब और बढ़ गया था जब पीएम मोदी के सबसे करीबी और सबसे ताकतवर नौकरशाह अरविंद शर्मा को नौकरी से त्यागपत्र दिलवा कर यूपी भेजा गया। सीएम योगी ने उनसे कई दिनों तक मुलाकात नहीं की और उनको मंत्री बनाने या कोई महत्वपूर्ण पद देने से मना कर दिया था। इसके बाद यह विवाद इतना बढ़ गया था कि यूपी भाजपा के ट्विटर अकाउंट से मोदी की फोटो ही हटा दी गयी थी। इस तनातनी को संघ ने संभाला और संघ के शीर्ष नेताओं ने यूपी और दिल्ली दोनों में संतुलन बनाया। चुनाव के बीच यह चर्चा चलती रही कि अगर 220 से कम सीटें आयी तो योगी का सीएम बनना आसान नहीं होगा पर भाजपा ने सहयोगियों के साथ 273 सीटें जीत ली।

सांध्य दैनिक 4PM एक्सक्लूसिव

इतनी बड़ी जीत के बाद भी यूपी भाजपा में सब कुछ आसान नहीं था। सूत्रों के मुताबिक योगी किसी भी कीमत पर डिप्टी सीएम बनाने को तैयार नहीं थे और दिल्ली बिना डिप्टी सीएम के उन्हें सीएम बनाने को तैयार नहीं था। संघ में योगी की पैरवी करने वाले नेताओं को भी समझा दिया गया था कि 2024 के लिये ऐसे नहीं चलाया जा सकता। तर्क दिये गये कि सपा की ढाई गुना सीटें बढ़ी और लगभग बारह प्रतिशत मत बढ़ गया। यह कम खतरा नहीं है। ऐसे में अब दिल्ली को यूपी में हस्तक्षेप करना ही होगा। बताया जाता है कि शुरुआत में योगी भी इसके लिये तैयार नहीं थे पर इस बार दिल्ली किसी भी कीमत पर झुकने को तैयार नहीं था। योगी के दो सबसे करीबी मंत्री महेन्द्र प्रताप सिंह और सुरेश राणा को लेकर योगी नरम थे पर दिल्ली सख्त था। राणा और महेन्द्र प्रताप पर भ्रष्टाचार के बहुत आरोप थे। आप सांसद संजय सिंह ने महेन्द्र प्रताप सिंह का सारा कच्चा चिट्ठा सभी के सामने रख दिया था। राणा हार चुके थे और महेन्द्र को बाहर का रास्ता दिखाना चाहता था दिल्ली दरबार। कौन मंत्री क्या संभालेगा यह चार्ट योगी को दे दिया गया था। इस चार्ट में सबसे ताकतवर उसी मंत्री को बनाया गया जिसे मिलने को योगी ने समय नहीं दिया था। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक योगी ने इसमें दखल देते हुए इच्छा जाहिर की कि दो बातें उनके मन की भी की जाएं। स्वतंत्र देव को जलशक्ति दिया जाए और केशव को महत्वपूर्ण विभाग न दिया जाए। यहां पर थोड़ा दिल्ली दरबार भी झुका और दोनों बातें मान ली गयीं।

इस मंत्रिमंडल में दिल्ली दरबार के सबसे करीबी रहे अरविंद शर्मा को सबसे महत्वपूर्ण विभाग ऊर्जा और नगर विकास विभाग देकर पूरे यूपी की नौकरशाही को संदेश दे दिया कि योगी सरकार के सबसे ताकतवर मंत्री अरविंद शर्मा है। दूसरा झटका पीडब्ल्यूडी को लेकर दिया गया। यह विभाग अप्रत्याशित रूप से जितिन प्रसाद को दिया गया जो भाजपा में आने से पहले योगी के धुर विरोधी थे और उन पर ब्राह्मणों की हत्या कराने का आरोप लगाते थे। यह भी सबसे महत्वपूर्ण विभागों में से एक है। इसी तरह चिकित्सा स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा को एक साथ करके उसका मंत्री बृजेश पाठक को बनाकर भी संदेश दिया गया कि अमित शाह के सबसे करीबी होने का इनाम पाठक को मिला है। शुरूआती दौर में गृह को भी अलग किसी मंत्री को देने की बात हो रही थी पर योगी इसके लिये एकदम तैयार नहीं हुए। इस प्रकार 34 विभाग योगी ने अपने पास रखकर संतुलन का संदेश देने की कोशिश जरूर की है पर इसे योगी का कम और अमित शाह का मंत्रिमंडल ज्यादा कहा जा रहा है।

अनुभव और उपयोगिता को देखकर सौंपे गए मंत्रियों को विभाग

» उप मुख्यमंत्री केशव मौर्य के हाथ से फिसला लोक निर्माण विभाग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उपयोगिता देख-देखकर जिस तरह से योगी मंत्रिपरिषद का गठन किया गया, ठीक उसी तर्ज पर कई मंत्रियों को विभाग भी उनके अनुभव और उपयोगिता को देखते हुए सौंपे गए हैं। नवगठित मंत्रिपरिषद के बीच काम का बंटवारा करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सबसे अधिक 34 विभाग अपने पास रखे हैं। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के हाथ से लोक निर्माण विभाग फिसलकर जितिन प्रसाद के पास पहुंचा है। केशव ग्राम्य विकास, समग्र ग्राम विकास और राष्ट्रीय एकीकरण जैसे विभाग देखेंगे।

वहीं, कैबिनेट मंत्री से पदोन्नत होकर पहली बार उपमुख्यमंत्री बने ब्रजेश पाठक का बढ़ा कद विभागों में भी दिखा है। उन्हें चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण विभागों की जिम्मेदारी दी गई है। योगी मंत्रिपरिषद ने 25 मार्च को शपथ ली। उसके बाद से ही विभागों के बंटवारे की प्रतीक्षा की जा रही थी। मंत्रियों के कद और प्रभाव का आकलन करते हुए विभाग दिए जाने की संभावना जताई जा रही थी। बदलाव की बात करें तो पिछली बार जो न्याय और विधायी विभाग ब्रजेश पाठक के पास थे, वह अब सीएम के पास हैं, जबकि योगी के पास रहा राष्ट्रीय एकीकरण अब उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के हिस्से में आया है। केशव के पास पहले लोक निर्माण विभाग जैसा महत्वपूर्ण विभाग था। इस बार भी उन्हें विकास से जुड़ा विभाग मिला है, लेकिन पीडब्ल्यूडी के स्थान पर ग्राम्य विकास एवं समग्र ग्राम विकास तथा ग्रामीण अभियंत्रण सहित छह विभाग मिले हैं। इनमें खाद्य प्रसंस्करण, मनोरंजन कर एवं सार्वजनिक उद्यम विभाग बरकरार रखा गया है। पहले ग्रामीण अभियंत्रण ब्रजेश पाठक के पास था। अब उपमुख्यमंत्री बनने के बाद उन्हें ऐसे विभागों की जिम्मेदारी सौंपी गई है कि वह जनसेवा के क्षेत्र में खुद को साबित कर सकें, उन्हें आमजन से जुड़े महत्वपूर्ण विभाग मिले हैं। इनमें चिकित्सा शिक्षा के अलावा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, परिवार कल्याण तथा मातृ एवं शिशु कल्याण विभाग का दायित्व सौंपा गया है। कोरोना काल के बाद से स्वास्थ्य विभाग और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। उपमुख्यमंत्री रहे डा. दिनेश शर्मा इस बार मंत्रिपरिषद में नहीं हैं। माध्यमिक शिक्षा छोड़कर उनके वाले सभी विभाग जैसे उच्च शिक्षा, विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी, इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी योगेंद्र उपाध्याय को मिले हैं।

स्वतंत्र देव सिंह

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बनने के पहले तक पिछली सरकार में परिवहन मंत्री का दायित्व संभाल चुके स्वतंत्र देव सिंह को इस बार जल शक्ति तथा बाढ़ नियंत्रण का जिम्मा सौंपा गया है। वह बुंदेलखंड के ही रहने वाले हैं। यह क्षेत्र जल संकट से जूझता रहा है। वहां सरकार हर घर जल पहुंचाने की योजना चला रही है। क्षेत्र के जानकार स्वतंत्रदेव इस दायित्व को अच्छे से निभा सकते हैं।

जितिन प्रसाद

योगी सरकार-1.0 के अंतिम विस्तार में प्राविधिक शिक्षा मंत्री बनाए गए जितिन प्रसाद को इस बार उनके अनुभव के हिसाब से काम सौंपा गया है। कांग्रेस शासित केंद्र सरकार में भूतल परिवहन मंत्री रहे जितिन को इस बार लोक निर्माण विभाग दिया गया है।

अरविंद कुमार शर्मा

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर राजनीति में आए पूर्व आईएएस अधिकारी अरविंद कुमार शर्मा का लंबा प्रशासनिक अनुभव रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के खास अधिकारियों में शामिल रहे शर्मा ने कई केंद्रीय योजनाओं को धरातल पर उतारने में खास भूमिका निभाई है। इसे देखते हुए ही उन्हें नगर विकास, शहरी समग्र विकास और ऊर्जा जैसे आधारभूत विकास वाले विभाग सौंपे गए हैं।

बेबी रानी मौर्य

महिला होने के नाते बेबी रानी मौर्य को महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग दिया है। वह इनका महत्व समझ सकती हैं। इससे पहले योगी सरकार 1.0 में यह जिम्मेदारी सांसद बनने से पहले डॉ. रीता बहुगुणा जोशी तो उनके बाद स्वतंत्र प्रभार के राज्यमंत्री के रूप में स्वाती सिंह संभाल चुकी हैं।

आशीष पटेल

अपना दल (एस) के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष आशीष पटेल खुद इंजीनियर हैं। वह इस क्षेत्र की समझ रखते हैं, इसलिए प्राविधिक शिक्षा मंत्री उन्हें बनाया गया है।

संजय निषाद

भाजपा के गठबंधन सहयोगी निषाद पार्टी के अध्यक्ष संजय निषाद ने गठबंधन ही इस शर्त पर किया था कि निषाद समाज के कल्याण के लिए काम किया जाए। ऐसे में कैबिनेट मंत्री बनाए गए संजय निषाद को निषाद समाज से सीधा जुड़ा मत्स्य विभाग दे दिया गया है।

असीम अरुण

स्वतंत्र प्रभार वाले राज्यमंत्रियों में असीम अरुण अनुसूचित जाति से आते हैं। समाज सेवा के संकल्प के साथ आईपीएस से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने वाले असीम को समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण विभाग देकर सेवा की असीम संभावनाओं वाली राह दिखा दी गई है।

नरेंद्र कश्यप

भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष नरेंद्र कश्यप को स्वतंत्र प्रभार के साथ राज्यमंत्री बनाया गया है। वह पार्टी के लिए पिछड़ा वर्ग में काम कर रहे थे, इसलिए सरकार में भी पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग संभालेंगे।

जनता से है आम आदमी पार्टी का गठबंधन : केजरीवाल

» हम उठाते हैं जनता के मुद्दे, करते हैं रोजगार की बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने उत्तर प्रदेश में बीजेपी की जीत को लेकर कहा कि विकल्पहीनता की वजह से ऐसा हुआ है। उन्होंने कहा कि विपक्ष हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा। दिल्ली के बाद पंजाब में जीत से उत्साहित केजरीवाल ने 130 करोड़ जनता का गठबंधन बनाने की इच्छा जाहिर कर राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार का संकेत दिया है।

एक टीवी इंटरव्यू में केजरीवाल ने हिंदुत्व की परिभाषा बताते हुए भाजपा पर निशाना भी साधा। कहा ना मेरी बीजेपी से लड़ाई है, ना कांग्रेस से लड़ाई है। हिंदुत्व की परिभाषा मैंने कई बार बताई है। मैं उस पर यकीन करता हूं और पूरा देश उस पर विश्वास करता है। रामायण और गीता में जो लिखा है वह हिंदुत्व है। भगवान राम ने रामायण में जो शब्द कहे, वह हिंदुत्व है। भगवान राम ने तो आपस में नफरत करना नहीं सिखाया। भगवान राम तो सबरी के जूठे बेर खाते हैं, और ये लोग दलितों की लिंचिंग कराते हैं। केजरीवाल ने कहा कोई विपक्ष ही नहीं बचा है ना। जब एक ही पार्टी है और सारे हाथ पर हाथ रखकर बैठे तो विकल्प ही नहीं है। केजरीवाल ने कहा मैं देश का आम आदमी हूं और जो आम आदमी के मुद्दे हैं, वही मेरे मुद्दे हैं। इस देश का आम आदमी क्या चाहता है? वह चाहता है कि मुझे रोजगार मिल जाए कि बच्चों का पेट भर सकूं। आज देश के पास रोजगार नहीं है। केवल हमारी पार्टी रोजगार की बात करती है। हमने बजट में 20 लाख रोजगार देने की घोषणा की है। यह मैं इसलिए बोल रहा हूं क्योंकि आम आदमी का दर्द समझता हूं। राष्ट्रीय स्तर पर विकल्प बनने के सवाल पर केजरीवाल ने कहा कि देश के अंदर लोग बदलाव चाहते हैं। दो राज्यों में एक ईमानदार पार्टी आ चुकी है। मेरे सामने राष्ट्र को खड़ा करने का... राजनीति में आने से पहले हम भी सोचते थे कि आज तक स्कूल-अस्पताल खराब हैं इसका मतलब यह मुश्किल काम है।

विधान परिषद में नेता विरोधी दल बने संजय लाठर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानमंडल में समाजवादी पार्टी ने सरकार को घेरने के लिए तगड़ी तैयारी की है। विधानसभा में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव नेता विरोधी दल हैं तो विधान परिषद में समाजवादी पार्टी ने संजय लाठर को विधान परिषद दल का नेता चुना है। समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य रहे वरिष्ठ नेता अहमद हसन के निधन के बाद से खाली पड़े पद पर संजय लाठर को विधान परिषद में नेता विरोधी दल बनाया गया है।

» सपा ने सरकार को घेरने के लिए की तगड़ी तैयारी

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष बेहद करीबी संजय लाठर को पार्टी ने मथुरा के मांट से विधानसभा चुनाव लड़ाया था। चुनाव में हारने के बाद भी वह विधान परिषद सदस्य के पद पर बराकरार हैं। विधान परिषद सदस्य संजय लाठर जाट समाज से आते हैं। विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष बने संजय लाठर नेता प्रतिपक्ष होंगे। इस संबंध में सूचना जारी कर दी गई है। विधायकों के शपथ ग्रहण के बाद लाठर को विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष घोषित किया गया है। उन्हें नेता विरोधी दल के रूप में वो सभी सुविधाएं प्राप्त होंगी जो कैबिनेट मंत्री को प्राप्त होती है। उधर विधान परिषद सदस्य के लिए नौ अप्रैल को होने वाले चुनाव से पहले ही समाजवादी पार्टी को झटका लगा है।

लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए पश्चिम यूपी से बने सर्वाधिक 23 मंत्री

» पूर्वांचल के खाते में 14 मंत्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूं तो मिशन 2024 को फतह करने के लिए भाजपा की नजर पूरे उत्तर प्रदेश पर है, लेकिन योगी सरकार टू के मंत्रिपरिषद से साफ है कि पार्टी का ज्यादा फोकस पश्चिमी यूपी पर ही रहेगा। सपा-रालोद गठबंधन के बावजूद विधानसभा चुनाव में जिस तरह से पार्टी ने पश्चिम में गहरी पैठ बनाते हुए शानदार सफलता हासिल की है, उसे लोकसभा चुनाव में भी बनाए रखने के लिए अबकी पिछली बार से लगभग दोगुना मंत्रियों को योगी की मंत्रिपरिषद में जगह दी गई है।

एक तरह से इन 23 मंत्रियों को 2024 की बिसात का प्रमुख मोहरा भी मान सकते हैं। दरअसल, 53 सदस्यीय योगी मंत्रिपरिषद के गठन में जातीय समीकरण साधने के साथ ही क्षेत्रीय संतुलन का भी पूरा ख्याल रखा गया है। चूंकि अब भाजपा के सामने दो वर्ष बाद 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव में

फिर केसरिया परचम लहराने का एक बड़ा एजेंडा है, इसलिए उसने अपने-अपने क्षेत्र और जाति पर मजबूत पकड़ रखने वाले पार्टी नेताओं को मंत्रिपरिषद में तव्वजो दी है। सपा-रालोद गठबंधन, किसान आंदोलन आदि से विधानसभा चुनाव में भाजपा के लिए पश्चिमी उत्तर प्रदेश की 136 सीटों पर विजय पताका फहराने की बड़ी चुनौती थी, लेकिन जिस तरह क्षेत्र के मतदाताओं ने योगी सरकार 1.0 की कानून-व्यवस्था को देखते हुए 93 सीटें भाजपा की झोली में डालीं, उसको देखते हुए नवगठित मंत्रिपरिषद में भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश का पलड़ा सर्वाधिक भारी दिख रहा है।

करारी हार से हैरान मायावती अब आकाश आनंद के सहारे कोर वोटरों को बसपा से जोड़ने में जुटीं

» नेशनल कोऑर्डिनेटर के पद पर बरकरार रखे गए हैं आकाश आनंद, लोक सभा चुनाव पर नजर

» विधान सभा चुनाव में दलित वोटों के शिफ्ट होने से बसपा प्रमुख हैं बेहद चिंतित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधान सभा चुनाव में करारी हार से हैरान बसपा प्रमख मायावती अब अपने भतीजे आकाश आनंद के सहारे सियासी जमीन मजबूत करने में जुट गयी है। वोट शेयर लगातार गिरने से चिंतित बसपा का मानना है कि आकाश आनंद को यदि अहम दलित चेहरे के रूप में स्थापित कर दिया जाए तो दलित वोटर बसपा के साथ खड़ा रहेगा। लिहाजा मायावती ने आकाश आनंद को पार्टी का इकलौता नेशनल कोऑर्डिनेटर बरकरार रखा है। साथ ही उनकी नजर अब 2024 के लोक सभा चुनाव पर टिक गयी है। इस बार विधान सभा चुनाव में बसपा की हालत बेहद पतली हो गई थी। बसपा को इस चुनाव में कुल 12.9 फीसदी वोट मिले।

माना जा रहा है कि यूपी में वह दलित वोट ही बसपा को पूरा नहीं मिल पाया जो बसपा की राजनीति का आधार है। चूंकि यूपी में दलित वोटरों की संख्या लगभग तीन करोड़ है। ऐसे में बसपा का काडर वोट बैंक बड़ी संख्या में दूसरी पार्टियों में शिफ्ट हुआ। इस चुनाव में मायावती 2007 की तरह सोशल इंजीनियरिंग करना चाहती थीं। इसके लिए पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा को आगे किया गया। इसके पीछे रणनीति यह थी कि ब्राह्मण वोटर साथ देंगे। इसमें दलित और मुस्लिम जुड़ गए तो नैया पार हो जाएगी। उन्होंने खूब सम्मेलन भी किए पर सारी रणनीति फ्लाप हो गयी। दलित भी शिफ्ट हो गए। ब्राह्मण आए नहीं और मुस्लिमों ने सपा का दामन थामा। यही कारण है कि मायावती अब अपने भतीजे आकाश आनंद को आगे कर उन्हें दलित चेहरे के रूप में स्थापित करने की कोशिश में हैं ताकि अपने काडर वोटर को बचाया जा सके। मायावती बार-बार कहती रही हैं कि उनका उत्तराधिकारी दलित ही होगा। हालांकि साथ में यह भी कहती रही हैं कि अभी वह बिल्कुल स्वस्थ हैं और लंबे समय तक राजनीति में सक्रिय रहने वाली हैं पर साथ ही अपने काडर वोटर को मजबूत करने के लिए दलित उत्तराधिकारी का दांव खेलना नहीं भूलती हैं। ऐसे में आकाश के लिए खुद को इस कसौटी पर खरा उतरने की चुनौती है। वह यूपी में मंच पर तो कई बार नजर आए पर बड़ी जिम्मेदारी के साथ जिस तरह से वर्ष 2024 लोक सभा चुनाव के लिए उनकी भूमिका तैयार की जा रही है, वह उनके लिए चुनौती भरी होगी।

लगातार घट रहा ग्राफ

2007 में 206 सीट के साथ उत्तर प्रदेश में सरकार बनाने वाली बसपा को 2012 में 80 और 2017 में 19 सीट मिली थीं। इसके बाद पार्टी को 2022 में सिर्फ एक सीट मिली है। 2007 में सपा को 97, भाजपा को 51 तथा कांग्रेस को 22 सीट मिली थीं। बसपा का लगातार घटता ग्राफ पार्टी की मुखिया मायावती के लिए बड़ी चिंता का कारण बन रहा है।

कार्यकारिणी को किया भंग

मायावती ने प्रदेश अध्यक्ष तथा जिला अध्यक्ष को छोड़कर उत्तर प्रदेश बसपा की सारी कार्यकारणी को भंग किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश के लिए तीन चीफ कोआर्डिनेटर बनाए हैं। मेरठ के मुनकाद अली, बुलंदशहर के राजकुमार गौतम तथा आजमगढ़ के विजय कुमार को प्रदेश के सभी कोआर्डिनेटर रिपोर्ट करेंगे। यह तीनों सभी कोआर्डिनेटर पर निगाह रखेंगे। इसी के साथ बसपा ने विधायक दल के नेता रहे शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली की घर वापसी भी करा ली है।

काडर की लगातार हो रही अनदेखी

बसपा काडर बेस कार्यकर्ताओं की पार्टी रही है, लेकिन पिछले कुछ वर्ष में लगातार काडर की अनदेखी की गई। कार्यकर्ताओं की इस नाराजगी को दूर करने के लिए मायावती काडर को फिर से शुरू कर सकती हैं और नए सिरे से पार्टी को खड़ा करने की कोशिश करेंगी। मायावती पार्टी में कई दिग्गजों का कद घटा सकती हैं। इतना ही नहीं लगातार मिलने वाली शिकायतों के आधार पर कई नेताओं को बाहर का रास्ता भी दिखा सकती हैं। मायावती बूथ स्तर के नेताओं से फीडबैक ले रही हैं, जिसमें यह निकल कर सामने आया है कि बड़े नेताओं का उन्हें सहयोग नहीं मिला है।

अपने वोट बैंक को बनाए रखने को अखिलेश का यूपी पर फोकस

भाजपा से टक्कर लेने के लिए सदन में मुख्यमंत्री को घेरेंगे, सपा प्रमुख के दांव से बढ़ी मायावती और प्रियंका की चुनौती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव का यूपी केंद्रित राजनीति का फैसला सबसे ज्यादा बसपा और कांग्रेस की चुनौतियां बढ़ाएगा। उनकी यह रणनीति अपना वोट बैंक बचाए रखने और प्रदेश में भाजपा के मुख्य विकल्प की छवि बरकरार रखने का प्रयास माना जा रहा है। ऐसे में मायावती और प्रियंका गांधी को अपनी राजनीतिक जमीन सहेजने में कठिनाई होगी। अखिलेश ने लोकसभा के बजाय विधान सभा में बने रहने के निर्णय से राजनीति के जानकारों को चौंका दिया है। सपा के वर्ष 2017 में सत्ता से बाहर होने पर वह कुछ समय विधान परिषद में रहे, पर वहां नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी अहमद हसन को दी। बाद में आजगमढ़ से लोकसभा पहुंचे। ऐसे में माना जा रहा था कि अभी भी वह प्रदेश के बजाय केंद्र की राजनीति को तरजीह देंगे। इधर कुछ वर्षों में यूपी में सीएम रह चुके नेता के लिए यही परंपरा मानी जाती है।

> “केवल बेंच बदल गई है, मैं अब विपक्ष में बैठूंगा। सरकार की जवाबदेही के लिए विपक्ष काम करेगा और विपक्ष की भूमिका सकारात्मक होगी। – अखिलेश यादव

हालांकि 2007 में मायावती के मुख्यमंत्री बनने के शुरुआती दो साल तब के निवर्तमान मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव नेता प्रतिपक्ष रहे। उसके बाद उन्होंने भी यह जिम्मेदारी अपने छोटे भाई शिवपाल सिंह यादव को सौंप दी। अखिलेश के यूपी विधान सभा में बने रहने के फैसले पर दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षक व राजनीतिक विश्लेषक डॉ. लक्ष्मण यादव कहते हैं कि अखिलेश समझ चुके हैं कि भाजपा से टक्कर लेने के लिए सदन से सड़क तक लड़ते हुए दिखना जरूरी है। रूहेलखंड विश्वविद्यालय में कार्यरत विश्लेषक एसी त्रिपाठी मानते हैं कि लोक सभा चुनाव आने तक सपा के वोट बैंक के राष्ट्रीय राजनीति में किसी अन्य विकल्प की तलाश की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। यह भी एक वजह है कि अखिलेश यूपी की राजनीति पर फोकस रखना चाहते हैं, जिससे अपने वोट बैंक को अपने साथ बनाए रख सकें।

विधानसभा में अखिलेश ने पहली बार ली विधायक की शपथ

यूपी विधान सभा चुनाव के बाद योगी आदित्यनाथ और अखिलेश यादव ने अब विधायक के रूप में शपथ ली है। गोरखपुर शहर विधान सभा सीट से चुनाव जीतने वाले योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को सदन में शपथ ली। इसके बाद नेता प्रतिपक्ष के रूप में अखिलेश यादव ने शपथ ली। अखिलेश मैनपुरी की करहल सीट से चुनाव जीते हैं। योगी और अखिलेश दोनों पहली बार यूपी विधान सभा के सदस्य बने थे। इससे पहले अखिलेश एमएलसी थे और 2019 में वह आजमगढ़ से सांसद बने थे। आजमगढ़ की सीट को अखिलेश ने इस चुनाव में विधायक बनने के बाद छोड़ दिया।

एमएलसी चुनाव में मैदान छोड़ने वालों पर सपा सख्त

विधान परिषद प्राधिकार क्षेत्र चुनाव में सपा के जिन उम्मीदवारों ने अपने नाम वापस लिए हैं, उन पर पार्टी हाईकमान सख्त हो गया है। सपा ने मिर्जापुर-सोनभद्र के उम्मीदवार रमेश सिंह व उनके सहयोगी सुनील यादव को पार्टी से निष्कासित कर दिया है। जल्द ही अन्य पर भी कार्रवाई की तैयारी है। सपा ने 36 सीट में 34 पर उम्मीदवार उतारे थे। दो सीटों पर रालोद चुनाव लड़ रहा था। निवर्तमान एमएलसी के चुनाव लड़ने से मना करते ही पार्टी के अंदरखाने हलचल मच गई। कई तरह के सवाल भी उठे। हालांकि बाद में सपा शीर्ष नेतृत्व ने 34 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा की। बुलंदशहर और मेरठ रालोद के खाते में गई। बुलंदशहर से रालोद ने सुनीता शर्मा को उम्मीदवार बनाया। सुनीता सपा से ब्लॉक प्रमुख रह चुकी हैं। गाजे बाजे के साथ नामांकन करने वाली सुनीता ने बाद में नाम वापस ले लिया। इसी तरह बदायूं से सिनोज कुमार शाक्य, हरदोई से रजीउद्दीन, मिर्जापुर-सोनभद्र से रमेश सिंह, बांदा-हमीरपुर से आनंद कुमार त्रिपाठी एवं गाजीपुर से भोलानाथ शुक्ला ने नाम वापस ले लिया। मैनपुरी-एटा के उम्मीदवार उदयवीर सिंह और राकेश एवं लखीमपुर खीरी के उम्मीदवार अनुराग एवं अलीगढ़ के जसवंत सिंह का पर्चा खारिज हो गया। ऐसे में यहां भाजपा उम्मीदवार निर्विरोध हो गए हैं।

मुलाकात की चर्चा ज्यादा

यूपी चुनाव में चुने गए नवनिर्वाचित विधायकों का शपथ ग्रहण कार्यक्रम चल रहा था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव

समेत सभी वरिष्ठ विधायकों को प्रोटेम स्पीकर रमापति शास्त्री शपथ दिला रहे हैं। इस बीच नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने भी विधान सभा में सदन के विधायक पद की शपथ ली। अखिलेश यादव पक्ष और विपक्ष के विधायकों का अभिवादन करते हुए शपथ लेने पहुंचे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नवनिर्वाचित विधायकों के शपथ ग्रहण के दौरान विधान सभा में विपक्ष के नेता अखिलेश यादव से गर्मजोशी से मुलाकात की। दरअसल, सीएम योगी अखिलेश यादव को देखते ही मुस्कराए और एक-दूसरे से हाथ मिलाया। सीएम योगी ने अखिलेश के कंधे पर भी हाथ रखा।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

हिमालय क्षेत्र में बढ़ता तापमान खतरे की घंटी

हिमालय क्षेत्र में बढ़ते तापमान ने खतरे की घंटी बजा दी है। यहां तापमान में वृद्धि की दर वैश्विक तापमान के औसत से काफी अधिक है। संयुक्त राष्ट्र संघ के इंटर गवर्नमेंटल पैनल फॉर क्लाइमेट चेंज की हर तीन साल में जारी फरवरी रिपोर्ट में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। तापमान में वृद्धि होने से हिमालय के अधिकतर हिमनद पीछे हट रहे हैं। अकेले गंगोत्री ग्लेशियर पंद्रह वर्षों में 0.23 वर्ग किमी कम हो चुका है। वायुमंडल में ब्लैक कार्बन की उपस्थिति के कारण यहां के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहा है। गंगोत्री ग्लेशियर सालाना 18 मीटर की दर से सिकुड़ रहा है। सवाल यह है कि तापमान में तेजी से वृद्धि क्यों हो रही है? क्या प्रकृति केंद्रित विकास नहीं होने के कारण हालात बदतर हो रहे हैं? क्या पेड़ों की अंधाधुंध कटाई ने पहाड़ी राज्यों के सामने खतरा उत्पन्न कर दिया है? क्या अति वर्षा और सूखा स्थानीय लोगों को पलायन के लिए मजबूर नहीं करेगा? क्या पर्यटन के विकास के नाम पर पहाड़ों की पारिस्थितिकी तंत्र को बिगाड़ दिया गया है? क्या हिमनदों को सुरक्षित किए बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है?

रिपोर्ट के मुताबिक हिमालय क्षेत्र का तापमान 0.2 डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ रहा है। 2031 के दशक में यह दर और तेज होगी। शताब्दी के अंत तक हिमालयी क्षेत्रों का तापमान 0.7 डिग्री तक बढ़ सकता है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के मुताबिक गंगोत्री ग्लेशियर के पीछे हटने की दर 60 और 70 के दशक से तेज हो गई थी। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि होने से हिमालय के अधिकांश हिमनद पीछे हट रहे हैं। हाल के दशकों में यहां बर्फबारी से ज्यादा बारिश हुई है इसलिए काराकोरम के कुछ अपवादों को छोड़कर अधिकांश हिमनद प्रभावित हुए हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक पहाड़ों पर जलवायु परिवर्तन के कारण बादल फटने व अतिवृष्टि की घटनाओं में तीन गुना वृद्धि होगी। पानी की कमी से खेती चौपट हो जाएगी। पीने व सिंचाई के लिए पानी की कमी, प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि और खेतीबाड़ी के चौपट होने से पहाड़ी राज्यों में पलायन बढ़ जाएगा। इसका सीधा असर मैदानी राज्यों पर पड़ेगा। इन राज्यों में जनसंख्या का घनत्व बढ़ने से बेरोजगारी समेत कई समस्याएं उत्पन्न होंगी। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और पर्यटन विकास के चक्कर में यहां के पारिस्थितिकी तंत्र को बिगाड़ दिया गया है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि वह इन क्षेत्रों को वनाच्छादित करे। साथ ही जल संरक्षण और खेती के अलावा आजीविका के अन्य साधनों का विकास करे। जल संरक्षण व वनीकरण को जनआंदोलन बनाकर ही इस चुनौती का सामना किया जा सकता है।

हिमालय क्षेत्र का तापमान 0.2 डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ रहा है। 2031 के दशक में यह दर और तेज होगी। शताब्दी के अंत तक हिमालयी क्षेत्रों का तापमान 0.7 डिग्री तक बढ़ सकता है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के मुताबिक गंगोत्री ग्लेशियर के पीछे हटने की दर 60 और 70 के दशक से तेज हो गई थी।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

संघ को डर गांधी से, भाजपा को खौफ कांग्रेस का!

श्रवण गर्ग

'जी-23' के अपंजीकृत नाम से सक्रिय कांग्रेस के गैर-जमीनी असंतुष्ट और पीएम मोदी आपस में औपचारिक रूप से मिले हुए बिना भी एक ही उद्देश्य के लिए काम करते नजर आते हैं। उद्देश्य है कांग्रेस से 'परिवार' के 'अवैध कब्जे' को खत्म करना। असंतुष्टों का मानना है कि इसके बाद कांग्रेस पूरी तरह मजबूत होकर सारे चुनाव जीतने लगेगी, जो पार्टी अभी 'घर' की है वह फिर 'सब की' हो जाएगी। दूसरी ओर, पीएम का मानना यह हो सकता है कि इसके बाद कांग्रेस जड़ से खत्म हो जाएगी। आरोप है कि मोदी जबसे पीएम बने हैं भाजपा को जोड़ने और कांग्रेस को तोड़ने में लगे हुए हैं। वे जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब भी बारह सालों तक उन्होंने यह कोशिश की पर उसमें पूरी तरह से सफल नहीं हो पाए । उनके गुजरात के प्रयोगों के बारे में यह भी प्रचारित है कि वे कांग्रेस ही नहीं भाजपा को भी अपनी जरूरत के मुताबिक लगातार तोड़ते रहे। कांग्रेस अभी भी प्रमुख विपक्षी दल के रूप में गुजरात में कायम है और 'जी-23' जैसा कोई समूह भी वहां जन्म नहीं ले पाया है।

मोहन भागवत के नेतृत्व वाली आरएसएस और उसके अनुषांगिक संगठन महात्मा गांधी से डरते हैं, उन्हें खत्म देखना चाहते हैं और मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा कांग्रेस से खौफ खाती है। देश को अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिलने के बाद दोनों ही भारत को गांधी और कांग्रेस से मुक्ति दिलवाना चाहते हैं। जाहिर है जब तक ये दोनों बने रहेंगे देश को आजादी दिलाने का सारा श्रेय इन्हें ही मिलता रहेगा, सावरकर और गोडसे को नहीं। देश में गांधी की मूर्तियां तोड़ी जा रही हैं, गोडसे की खड़ी की जा रही हैं, बापू के आश्रमों को राष्ट्रवाद के थिएटरों में बदला जा रहा है, 'हिंद स्वराज' के पन्नों को बारूदी मिसाइलों में ढाला जा रहा है पर गांधी है कि मरने का नाम नहीं ले रहे हैं। यही हाल कांग्रेस का है। भाजपा की तमाम कोशिशों के बावजूद लगभग चौदह दशक पुरानी यह संस्था खत्म नहीं हो पा रही है।'जी-23' के एक कर्णधार कपिल सिब्बल की मानें तो साल 2014 के बाद से 177 सांसद और विधायक और 222 उम्मीदवार कांग्रेस छोड़ चुके हैं और किसी अन्य दल ने इस तरह का पलायन नहीं देखा होगा।' इसके बावजूद सिब्बल और गुलाम नबी आदि को इतनी मेहनत करनी पड़ रही है। जैसे ही कोई चुनाव करीब आता है, प्रधानमंत्री के भाषणों में गांधी परिवार की उपस्थिति के चर्चे होने लगते हैं। (पांच राज्यों के चुनावों के ठीक पहले संसद के बजट सत्र में क्या था। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बहस के जवाब में पीएम ने संसद का तीन घंटे का कीमती समय सिर्फ कांग्रेस की चमड़ी को नंगा करने में खर्च किया था। जब मोदी बोल रहे थे, उनकी पार्टी के सांसद मेजें थपथपा रहे थे।) वहीं असंतुष्टों का समूह भी परिणामों की घोषणा के साथ नेतृत्व परिवर्तन के लिए टूट पड़ता है। इस बार भी वैसा ही हुआ पर उसकी उम्मीदें 2019 की तरह पूरी नहीं हुईं जब हार की जिम्मेदारी लेते हुए राहुल गांधी ने पार्टी के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया था। सोनिया गांधी ने इस्तीफे की पेशकश ज़रूर की होगी पर अंततः नहीं दिया। कोई दो राय नहीं कि जिस तरह कुछ धर्मों में स्वेच्छा से प्राण त्याग देने की इच्छा रखने वाले अनुयायी अन्न-जल छोड़ देते हैं वैसी ही कुछ हालत इस समय कांग्रेस की भी है। एक सौ सैंतीस साल की उम्र को प्राप्त कर चुकी यह पार्टी भी देह त्याग की मुद्रा में है । ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि उसके सिरहाने बैठा असंतुष्ट अनुयायियों का समूह बजाय किसी योग्य चिकित्सक को बुलाकर इलाज का इंतजाम करने के उसके द्वारा ली जाने

वाली अंतिम सांस के बाद पार्टी का बंटवारा करने की प्रतीक्षा में है। पिछले लोकसभा चुनावों में पार्टी की करारी हार के बाद अध्यक्ष पद से इस्तीफा देते समय राहुल ने कांग्रेस के कुछ बड़े नेताओं पर आरोप लगाया था कि वे बजाय पार्टी को जिताने के अपने बेटे-बेटियों को जितवाने में लगे रहे। जिन नेताओं पर राहुल ने आरोप लगाए थे वे कौन थे और आज कहां हैं ? वे आज भी उन्हीं स्थानों पर उपस्थित हैं और पूर्व की तरह ही निरंकुश बने हुए हैं। इस सवाल के जवाब का देश की अंतरात्मा और देह के साथ गहरा सम्बन्ध है कि गांधी और उनके सानिध्य में पलकर बड़ी हुई एक ऐसी धर्म-निरपेक्ष संस्था को (जिसे वे बाद में स्वयं ही समाप्त करके लोक सेवक संघ में परिवर्तित करना चाहते थे) भारत से विदा करने में भाजपा जैसी घोर हिंदू राष्ट्रवादी पार्टी के क्या निहित स्वार्थ होने चाहिए ? दोनों दलों (भाजपा और कांग्रेस)के बीच उनके राजनीतिक प्रभाव-क्षेत्र, सदस्य-संख्या, चंदे की राशि और साध्य की प्राप्ति के लिए हिंसा का भी साधन के रूप में इस्तेमाल करने आदि को करने को लेकर इतना बड़ा फर्क है कि आपसी बराबरी के लिए कोई बारीक सी गली भी नजर नहीं आती। तब और क्या कारण हो सकते हैं जो उन असंतुष्टों को नहीं दिख रहे हैं जो देह-त्याग जैसी स्थिति में भी कांग्रेस पर और कठिन उपवास के लिए दबाव बना रहे हैं ? कांग्रेस का बने रहना केवल इसीलिए जरूरी नहीं है कि उसके द्वारा लड़े जाने वाला हरेक चुनाव सत्ता की प्राप्ति में तब्दील होना ही चाहिए, बल्कि इसलिए आवश्यक है कि जो भी पार्टी या व्यक्ति शासन में चुनकर आए उसकी धर्म-निरपेक्षता के प्रति नीयत और उसके एकाधिकारवादी चाल-चलन पर कड़ी नजर रखी जा सके। जो कारण कांग्रेस को एक आजमायी हुई प्रजातांत्रिक संस्था के रूप में सुरक्षित करने के संबंध में गिनाए जा सकते हैं वे ही गांधी के विचार को भी संरक्षित रखने के संबंध में पेश किए जा सकते हैं। असंतुष्टों द्वारा कांग्रेस में नेतृत्व-परिवर्तन या सामूहिक नेतृत्व की मांग का संबंध पार्टी के लिए अपना रक्तदान करने से ज्यादा उनकी इस मनोकामना से हो सकता है कि बजाय एक-एक करके लोग भाजपा में भरती हों ,पूरी पार्टी ही उसमें समाहित कर दी जाए। (किसी वक्त सोनिया गांधी के विदेशी मूल का नागरिक होने को मुद्दा बनाकर अलग कांग्रेस बनाई गई थी, अब यह कहा जा रहा है कि कांग्रेस की स्थापना एक गोरी चमड़ी के व्यक्ति एओ ह्यूम ने की थी , किसी हिंदू ने नहीं)पूछा जा सकता है कि कांग्रेस की तरह के नेतृत्व-परिवर्तन की मांग क्या 1984 के चुनावों के बाद भाजपा में की गई होगी जब लोक सभा में उसकी सदस्य संख्या घटकर सिर्फ़ दो रह गई थी? या तब की गई थी जब मोदी के नेतृत्व में 2014 में पार्टी की प्रचंड जीत के तत्काल बाद पहले दिल्ली बिहार और फिर 2018 में मध्यप्रदेश ,राजस्थान और छत्तीसगढ़ के विधान सभा चुनावों में करारी पराजय हो गई थी? इसकी क़तई उम्मीद नहीं की जानी चाहिए कि दिल्ली में हुई कार्यसमिति की बैठक के बाद कांग्रेस किसी नए अवतार में प्रकट होने वाली है और वह जनता (तथा धर्म) से जुड़े मुद्दों पर ज्यादा आक्रामक तरीके से सत्तारूढ़ दल को चुनौती देगी। उसकी तमाम कमजोरियों के बावजूद वर्तमान की कांग्रेस को भी बनाए रखना इसलिये जरूरी है कि प्रजातंत्र और धर्मनिरपेक्षता में आस्था को लेकर मोदी के नेतृत्व के प्रति देश का वैसा विश्वास कभी उत्पन्न नहीं हो पाएगा जैसा किसी समय नेहरू, वाजपेयी या मनमोहन सिंह को लेकर था। कांग्रेस के असंतुष्ट नेता सोनिया के इंदिरा बन जाने का तो विरोध करते हैं पर मोदी के इंदिरा अवतार के प्रति उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। कांग्रेस के विद्रोही शायद मोदी की मदद से 'परिवार' को संगठन की इमारत से बेदख़ल करना चाहते हैं ?

मोटे अनाज की खेती बढ़े

अशोक भगत

विश्वव्यापी महामारी से उबरने के बाद दुनिया पटरी पर आती दिख रही है। हालांकि जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अवसाद अभी भी बरकरार है, लेकिन संतोष की बात यह है कि अब महामारी से मुठभेड़ का हथियार दुनिया ने ईजाद कर लिया है। बावजूद इसके हम मानव संपदा को संभालने की सबसे बड़ी चुनौती का सामना कर रहे हैं। भारत जैसे देश में तो यह बड़ी समस्या है। फिलहाल हमारे यहां खाद्यान्न की कोई कमी नहीं है। विश्वस्त आंकड़े बताते हैं कि कोरोना काल में हमारे किसानों ने कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाया है। जहां उद्योग, पर्यटन एवं सेवा जैसे आर्थिक विकास के स्रोत शुष्क से हो गये, वहीं कृषि विकास की दर ने मिसाल पेश की है पर इतने भर से हमें तसल्ली नहीं होनी चाहिए। कृषिगत क्षमता में इजाफा हमारा और हमारी सरकार का मूल मंत्र होना चाहिए। यह बदल रहे जलवायु के कारण खाद्यान्न की आसन्न समस्या के समाधान के लिए भी जरूरी है।

खाद्यान्न उत्पादन के लिए उपयोग होनेवाले मीठे पानी की लगातार कमी होती जा रही है। साथ ही, दुनिया के कई फसल उत्पादक क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के कारण शुष्कता बढ़ने लगी है। इसका असर पड़ना तय है और स्वाभाविक रूप से खाद्यान्न उत्पादन पर इसका नकारात्मक असर होगा। इन आसन्न खतरों को भांप कर हमारी सरकार ने खाद्यान्न की कमी को दूर करने की व्यवस्थित योजना बनायी है, जो हमारी पारंपरिक कृषि प्रणाली पर आधारित है लेकिन उसमें थोड़ा वैज्ञानिक संशोधन किया गया है। बता दें कि जिसे हम मोटा अनाज कहते हैं और अमूमन उसे गरीब लोगों का भोजन माना जाता है, अब सरकार ने उसके विकास की योजना बनायी है। मोटे अनाज में पोषक तत्वों की मात्रा बहुत होती है। एक शोध से पता चला है कि मोटे अनाज में प्रोटीन, विटामिन ए, लौह तत्व एवं आयोडिन जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं। इसका उपयोग किया जाए तो हम अपनी बड़ी आबादी को पोषक अनाज देने में कामयाब होंगे।

मोटे तौर पर ज्वार, मडुवा, रागी, कुटको, सांवा, कंगनी, चीना और मक्का को मोटे अनाजों की श्रेणी में रखा गया है। इस अनाज की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसका शुष्क क्षेत्र में भी उत्पादन किया जा सकता है। यही नहीं, धान व गेहूं की तुलना में इसमें कम खर्च करना पड़ता है। इसके उत्पादन में अन्य फसलों की तुलना में समय भी बहुत कम लगता है। यही कारण है कि भारत सरकार ने वर्ष 2018 को राष्ट्रीय कदन्न यानी मोटा अनाज वर्ष घोषित किया था। भारत के इस प्रयास को दुनिया भी सराहने लगी है। जिस प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सद्प्रयास से पूरी दुनिया में भारतीय योग का डंका बजने लगा है, उसी प्रकार मोटे अनाज के उत्पादन पर भी दुनिया सहमत होने लगी है।

अगला वर्ष यानी 2023 को विश्व खाद्यान्न संगठन ने अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय किया है। हरित क्रांति के कारण हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि तो हुई लेकिन हम बहुत कुछ पीछे छोड़ आये। आंकड़े बताते हैं कि हरित क्रांति के पूर्व हमारे देश में लगभग 36.50 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के कदन्नों की खेती होती थी लेकिन वर्ष 2016-17 में यह क्षेत्रफल घट कर 14.72 मिलियन हेक्टेयर पर सिमट गया है। हमारे आहार आदत में व्यापक परिवर्तन आया है। हमारा समाज गेहूं और चावल को ही अभिजात्य भोजन मानने लगा है। इस चित्र को बदलना होगा। आने-वाले समय में अपनों को यदि भुखमरी से बचाना है तो हमें पारंपरिक मोटे अनाजों को भोजन में शामिल करना होगा। जानकारों की राय में कुपोषण का मतलब भोजन की अनुपलब्धता नहीं है, अपितु विश्व खाद्य संगठन का मानना है कि जो व्यक्ति 1800 कैलोरी से कम ऊर्जा ग्रहण कर रहा है, वह भी कुपोषित है। इन दिनों भारत में कुपोषितों की संख्या में कमी आयी है लेकिन इससे यह अंदाजा लगा लेना कि हम खाद्यान्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर हो गये हैं, यह ठीक नहीं है। समाज को भी सरकार के साथ कदमताल करना होगा और मोटे अनाजों के उत्पादन पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। झारखंड जैसे पठारी व पथरीली जमीन के लिए यह बेहतर विकल्प हो सकता है। इस बार के बजट में झारखंड सरकार द्वारा रियायती दरों पर गरीबों को प्रति माह एक किलो दाल देने की घोषणा सराहनीय है, लेकिन सरकार ने जिस कारण यह निर्णय लिया है, उसका समाधान झारखंड के गांवों से निकाला जा सकता है। झारखंड में उपजने वाले कई ऐसे मोटे अनाज हैं, जिसमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन उपलब्ध है। सरकार को उस अनाज के प्रोत्साहन पर बजट की एक निश्चित राशि खर्च करनी चाहिए। साथ ही, झारखंड में उत्पादित होनेवाले धान पर अतिरिक्त समर्थन मूल्य निर्धारित कर देना चाहिए। भारत सरकार ने मोटे अनाज को बढ़ावा देने के लिए गेहूं व चावल की तुलना में इसके समर्थन मूल्य को लगभग दोगुना कर दिया है। इससे मोटे अनाजों के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ेगा। छोटे व मझोले किस्म के किसानों को फायदा होगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। कुल मिलाकर, हमें अपने फसल उत्पादन को परंपरा के साथ जोड़ने की जरूरत है । इसके साथ ही अपनी खाद्य आदत में परिवर्तन कर मोटे अनाजों को जोड़ लेना चाहिए।

भूख लगना आमतौर पर एक शारीरिक क्रिया है, जो किसी भी समय लग सकती है। खासकर सुबह, दोपहर और शाम को हर किसी को भूख लगती है क्योंकि यही हमारे खाने का सही समय होता है। लेकिन, कभी-कभी यही भूख किसी बीमारी का संकेत भी हो सकती है।

रात में बार-बार भूख लगना

बीमारी का है संकेत

इंसानी शरीर को चलाने के लिए खाने की जरूरत तो पड़ती है लेकिन जब रात में लोग बार-बार उठकर खाने की तरफ भागते हैं तो यह लक्षण गंभीर मसला भी हो सकता है। जब इंसान काम ज्यादा करता है तो उसे भूख भी ज्यादा लगती है। वहीं कई लोगों को बिना कुछ काम किए भी भूख लगती है। इसमें कुछ नया नहीं है वह इंसान नार्मल है जबकि हम बात कर रहे हैं रात को खाना खाकर सोने चले जाने के बाद बार-बार भूख लगने की आदत के बारे में जो बिल्कुल सही नहीं है।

ऐसे में आप रात के वक्त उठकर बार-बार कुछ न कुछ खाने की कोशिश करते हैं, जिसकी वजह से नींद भी प्रभावित होती है। लेकिन कभी-कभी इस तरह की आदत किसी तरह की बीमारी का संकेत भी हो सकती है। अगर आप रात में ऐसा बार-बार करते हैं तो मतलब गड़बड़ है। आप रात में उठकर खाना खाते हैं तो आप ईटिंग सिंड्रोम जैसी खतरनाक बीमारी के शिकार भी हो सकते हैं या फिर इस बीमारी को आमंत्रित कर रहे हैं। दरअसल, ईटिंग सिंड्रोम नामक बीमारी होने पर रात के वक्त का खाना खाने के बावजूद भी आपको भूख लगने लगती है और यह धीरे-धीरे आदत बन जाती है। ऐसे में आप सही तरह से सो भी नहीं पाते हैं और रात के समय बार-बार उठकर कुछ न कुछ खाने का प्रयास करते हैं।

विशेषज्ञों की मानें तो इस बीमारी का सीधा जुड़ाव तनाव से होता है। इस तरह की बीमारी में खासकर रात के वक्त उस इंसान को तनाव, घबराहट और अधिक चिंता सताती है और उसे सोने में भी काफी दिक्कत होती है, जिसकी वजह से वह रात में बार-बार उठकर चर्बी बढ़ाने वाली चीजें खाता रहता है। वहीं, इस बीमारी से ग्रसित लोगों को सुबह के वक्त भूख बिल्कुल भी नहीं लगती यदि लगती भी है तो न के बराबर लगती है। अगर आप के साथ ऐसा कुछ भी हो रहा हो तो आप किसी अच्छे डॉक्टर की सलाह लें और अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी से थोड़ा वक्त निकालकर मेडिटेशन जरूर करें। इससे आपके शरीर में ऑक्सीजन का संचार सही ढंग से होगा जिसकी वजह से आपका तनाव कम होने लगेगा और आपका मन भी काफी प्रसन्न रहेगा।

क्या है ईटिंग सिंड्रोम

ईटिंग सिंड्रोम एक ऐसी बीमारी है जिससे ग्रसित लोगों को डिनर करने के बाद भी भूख लगने की आदत होती है। ये कुछ ऐसे लक्षण हैं जिनके माध्यम से ये पता किया जा सकता है कि आप ईटिंग सिंड्रोम से पीड़ित हैं या नहीं। विशेषज्ञों की मानें तो यह एक ऐसी बीमारी है जो तनाव से जुड़ी है। इस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति आमतौर पर अवसादग्रस्त होता है और खासतौर से रात के समय उसे तनाव, घबराहट और चिन्ता अधिक महसूस होती है। उसे नींद आने में भी दिक्कत आती है, अगर नींद आ भी जाए तो टूटती रहती है। शायद इसीलिए ईटिंग सिंड्रोम से ग्रसित लोग रात में उठकर कुछ न कुछ खाते रहते हैं। इस तरह नाइट ईटिंग सिंड्रोम से पीड़ित लोगों को सुबह के समय बिल्कुल भूख नहीं लगती और वो आमतौर पर रात को अधिक खाते हैं।

कैसे करें उपचार

अगर आपको इस तरह के संकेत दिखाई देते हैं तो आप किसी अच्छे डॉक्टर की सलाह ले सकते हैं। डॉक्टर भी सोने और खाने की आदतों से संबंधित लक्षणों के बारे में पूछते हैं, जिसके माध्यम से वह आपको इलाज बताएंगे। इसके अलावा ब्रेन वेव्स, ब्लड ऑक्सीजन लेवल और हर्ट एंड ब्रिदिंग रेट्स की जांच की सलाह भी दे सकते हैं, जिससे बीमारी के बारे में पता लगाया जा सके।

हंसना मना है

लड़की: मैं ऐसे लड़के से शादी करूंगी जिसका कारोबार बहुत ऊंचा हो।
लड़का: तो फिर मैं परफेक्ट हूं। लड़की: वो क्यों। लड़का: मेरी पहाड़ों पर किराने की दुकान है।

एक दिन पति अपनी पत्नी को मेले में घुमाने ले गया, मेले में एक चित्रकार उसके पास आया और बोला: सर, मैडम की तस्वीर बनवा लीजिये, ऐसी तस्वीर बनाऊंगा जो बोल उठेगी। पति: नहीं बनवानी, पहले से ही इतना बोलती है, ऊपर से तस्वीर भी बोलेगी तो कहां जाऊंगा मैं!

बच्चा: गुड नाइट मम्मी। मम्मी: गुड नाइट बेटा। बच्चा: गुड नाइट डैडी। डैडी: गुड नाइट बेटा।
बच्चा (परेशान होकर): अरे, गुड नाइट कहां है ये पूछ रहा हूं अंग्रेजों की औलादों मच्छर काट रहे हैं!

पप्पू: मां, मैंने चार घंटे हरियाणा के किसानों के साथ बिताए। मां: शाबाश बेटा, तूने क्या सीखा। पप्पू: ल्या रै एक बीड़ी प्यार!

बॉस: कहां गए थे। संता: बाल कटवाने।
बॉस: ऑफिस के समय में।
संता: बाल बढ़े भी तो ऑफिस में ही थे!
बॉस: घर में भी तो रहते हो!

कहानी — चिल्लाओ मत

एक सन्यासी अपने शिष्यों के साथ गंगा नदी के तट पर नहाने पहुंचा। वहां एक ही परिवार के कुछ लोग अचानक आपस में बात करते-करते एक दूसरे पर क्रोधित हो उठे और जोर-जोर से चिल्लाने लगे। संन्यासी यह देख तुरंत पलटा और अपने शिष्यों से पुछा कि बताओ क्रोध में लोग एक दूसरे पर चिल्लाते क्यों हैं। शिष्य कुछ देर सोचते रहे, एक ने उत्तर दिया, क्योंकि हम क्रोध में शांति खो देते हैं इसलिए! पर जब दूसरा व्यक्ति हमारे सामने ही खड़ा है तो भला उस पर चिल्लाने की क्या ज़रुरत है, जो कहना है वो आप धीमी आवाज में भी तो कह सकते हैं। सन्यासी ने पुन: प्रश्न किया। कुछ और शिष्यों ने भी उत्तर देने का प्रयास किया पर बाकी लोग संतुष्ट नहीं हुए। अंतत: संन्यासी ने समझाया, जब दो लोग आपस में नाराज होते हैं तो उनके दिल एक-दूसरे से बहुत दूर हो जाते हैं और इस अवस्था में वे एक-दूसरे को बिना चिल्लाये नहीं सुन सकते, वे जितना अधिक क्रोधित होंगे उनके बीच की दूरी उतनी ही अधिक हो जाएगी और उन्हें उतनी ही तेजी से चिल्लाना पड़ेगा। क्या होता है जब दो लोग प्रेम में होते हैं। तब वे चिल्लाते नहीं बल्कि धीरे-धीरे बात करते हैं क्योंकि उनके दिल करीब होते हैं, उनके बीच की दूरी नाम मात्र की रह जाती है। संन्यासी ने बोलना जारी रखा और जब वे एक दूसरे को हद से भी अधिक चाहने लगते हैं तो क्या होता है, तब वे बोलते भी नहीं वे सिर्फ एक दूसरे की तरफ देखते हैं और सामने वाले की बात समझ जाते हैं। प्रिय शिष्यों, जब तुम किसी से बात करो तो ये ध्यान रखो की तुम्हारे हृदय आपस में दूर न होने पाएं, तुम ऐसे शब्द मत बोलो जिससे तुम्हारे बीच की दूरी बढ़े, नहीं तो एक समय ऐसा आएगा कि ये दूरी इतनी अधिक बढ़ जाएगी कि तुम्हे लौटने का रास्ता भी नहीं मिलेगा इसलिए चर्चा करो, बात करो लेकिन चिल्लाओ मत।

10 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

थोड़े प्रयास से काम बनेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। धनलाभ के अवसर हाथ आएंगे। मान-सम्मान प्राप्त होगा। मित्रों का सहयोग कर पाएंगे।

वृषभ

पुराना रोग उभर सकता है। बेवजह विवाद की स्थिति निर्मित होगी। दु:खद समाचार प्राप्त हो सकता है। नकारात्मकता रहेगी। भागदौड़ अधिक होगी। दुविधा रहेगी।

मिथुन
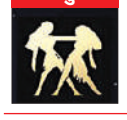
विद्यार्थी वर्ग अपने कार्य में सफलता प्राप्त करेगा। अध्ययन संबंधी बाधा दूर होगी। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी।

कर्क

प्रेम-प्रसंग में जल्दबाजी न करें। अज्ञात भय रहेगा। शारीरिक कष्ट संभव है। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। चिंता तथा तनाव रहेंगे। भूमि व भवन संबंधी खरीद-फरोख्त की योजना बनेगी।

सिंह

शत्रु नतमस्तक होंगे। आराम का वक्त प्राप्त होगा। चैन की सांस ले पाएंगे। थकान व कमजोरी रह सकती है। लेन-देन में सावधानी रखें। धन प्राप्ति सुगम होगी। निवेश शुभ फल देगा।

कन्या

पुराना रोग परेशानी का कारण बन सकता है। वाहन, मशीनरी व अग्नि आदि के प्रयोग में सावधानी रखें। किसी विशेष व्यक्ति से अकारण विवाद हो सकता है। धनार्जन होगा।

तुला

दुष्टजनों से दूर बनाएं। धार्मिक कार्य, पूजा-पाठ-दान इत्यादि में खर्च होगा। कोर्ट व कचहरी तथा सरकारी कार्यालयों में रुके कार्य मनोनुकूल रहेंगे।

वृश्चिक

नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। नए कार्य मिल सकते हैं। सामाजिक कार्य करने का मन बनेगा। मान-सम्मान प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी।

धनु

यात्रा लाभदायक रहेगी। बकाया लेनदारी वसूल होगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। रोजगार में वृद्धि होगी। शत्रु सक्रिय रहेंगे। व्यापार-व्यवसाय मनोनुकूल चलेगा।

मकर

पुराना रोग उभर सकता है। वाहन, मशीनरी व अग्नि आदि के प्रयोग में सावधानी रखें। किसी व्यक्ति विशेष से विवाद हो सकता है। मान घटेगा। किसी भी अपरिचित की बातों में न आएं।

कुम्भ

परीक्षा, प्रतियोगिता व साक्षात्कार आदि में सफलता मिलेगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ के योग हैं। सट्टे व लॉटरी से दूर रहें। व्यापार-व्यवसाय मनोनुकूल चलेगा।

मीन

शारीरिक कष्ट संभव है। अनहोनी की आशंका रहेगी। घर में अतिथियों का आगमन होगा। दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे।

इंतजार खत्म, रिलीज हुआ केजीएफ चैप्टर: 2 का ट्रेलर

बॉलीवुड | तड़का

सिनेमा के सुपरस्टार यश की मोस्ट अवेटेड फिल्म केजीएफ चैप्टर 2 का ट्रेलर रिलीज हो गया है। फिल्म 14 अप्रैल की सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए बिल्कुल तैयार है। दर्शक काफी लंबे वक्त से इस फिल्म के दूसरे पार्ट का इंतजार कर रहे थे। इसी बेसबी को देखते हुए अब मेकर्स ने केजीएफ चैप्टर 2 का ट्रेलर जारी कर दिया है। मेकर्स की कोशिश है कि इस फिल्म को केजीएफ चैप्टर 1 से और भी ज्यादा ब्लॉकबस्टर बनाया जाए। इसके लिए रविवार को बेंगलुरु में ग्रैंड ट्रेलर लॉन्च इवेंट रखा गया। यह 2018 की ब्लॉकबस्टर फिल्म केजीएफ चैप्टर 1 का सीक्वल है। रॉकी भाई का किरदार निभाकर यश एक बार फिर से फैंस का दिल जीतने के लिए आ रहे हैं।कन्नड़ में शूट हुई इस फिल्म को चार अन्य भाषाओं तेलुगू, तमिल, हिंदी और मलयाल में रिलीज किया जाएगा। केजीएफ चैप्टर 1 की सफलता के बाद अब दर्शक इस फिल्म के दूसरे भाग का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। सामने आए ट्रेलर को देखने के बाद फिल्म को लेकर दर्शक और उत्साहित नजर आ रहे हैं। 2 मिनट 56 सेकेंड के इस ट्रेल में यश का धुआंधार एक्शन दिख रहा है। इसके अलावा बॉलीवुड अभिनेत्री रवीना टंडन और अभिनेता संजय दत्त ने भी अपना एक अलग ही अंदाज दिखाया है। संजय फिल्म में खलनायक अधीरा की भूमिका निभाएंगे। केजीएफ: चैप्टर 2 के ट्रेलर के बारे में जानकारी देते हुए मेकर्स ने कुछ दिनों पहले ही बताया था कि 27 मार्च शाम 6 बजकर 40 मिनट पर केजीएफ 2 का ट्रेलर रिलीज किया जाएगा। बता दें कि इस फिल्म का पहला पार्ट साल 2018 में रिलीज किया गया था। वहीं इस फिल्म के बारे में बताते हैं कि पहले पार्ट में दर्शकों ने खूब सराहा था। वहीं दूसरा पार्ट भी पसंद किया जा रहा है।

विद्युत जाम्वाल बायोपिक में निभाएंगे शेर सिंह राणा का किरदार

अपने दमदार और अलग तरह के एक्शन के लिए मशहूर विद्युत जाम्वाल शेर सिंह राणा की बायोपिक में शीर्षक किरदार निभा रहे हैं। विद्युत ने सोमवार को सोशल मीडिया के जरिए अपनी नई फिल्म का एलान किया। फिल्म का निर्देशक श्रीनारायण सिंह कर रहे हैं, जबकि निर्माता विनोद भानुशाली हैं।
बायोपिक का हिस्सा बनने पर विद्युत ने कहा शेर सिंह राणा मेरी पहली बायोपिक है। मुझे लगता है कि नियति ने सारे पहलुओं को जोड़ा और निडर शेर सिंह राणा की भूमिका मुझ तक पहुंचाई है। मैं विनोद भानुशाली और श्रीनारायण सिंह के साथ काम करने के लिए बेहद उत्साहित हूं।
फिल्म की कास्टिंग के बारे में बात करते हुए श्रीनारायण सिंह कहते हैं कि जब आप शेर सिंह राणा की कहानी सुनेंगे तो आप जानेंगे कि उनका जीवन और उनके अनुभव बहुत ही रोमांचक और साजिशों से भरे हुए थे, जबकि विद्युत जामवाल ने एक्शन की दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई है। इस फिल्म में वो एक ऐसा किरदार निभाते हुए नजर आएंगे, जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं किया होगा। यह एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है, जिसका एकमात्र ध्येय अपने देश के लिए कुछ करना था। विद्युत जामवाल के साथ फिल्म के बारे में बात करते हुए निर्माता विनोद भानुशाली ने कहा शेर सिंह राणा एक ऐसी कहानी पर प्रकाश डालेगी, जिसने सालों पहले भारत में हलचल मचा दी थी। इस फिल्म के जरिए दर्शक विद्युत को बिल्कुल नये अंदाज में देखेंगे।

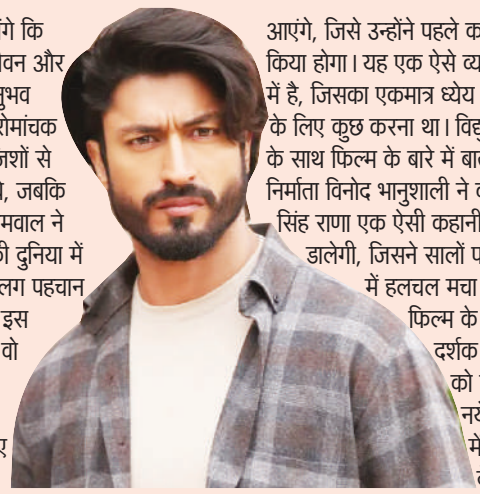

बॉलीवुड | मन की बात

काले जादू के सहारे बनाना चाहती थी करियर : पायल

कंगना रनोट के अत्याचारी खेल में रोज नए धमाके हो रहे हैं। ये गेम दिन ब दिन दिलचस्प होता जा रहा है। लेटेस्ट एपिसोड में पायल रोहतगी ने खेल में बने रहने के लिए अपनी जिंदगी के गहरे राज का खुलासा किया है। एक्ट्रेस ने बताया कि अपनी प्रोफेशनल लाइफ में आगे बढ़ने के लिए उन्होंने काले जादू और तंत्र-मंत्र का सहारा लिया था। पायल ने बताया, मुझे इंडस्ट्री में 15 साल हो गए हैं और एक समय ऐसा भी था जब मेरा करियर अच्छा नहीं चल रहा था। मैंने तांत्रिक पूजा करी अपने करियर को पुश देने के लिए। मुझे नहीं लगता कि कोई भी शिक्षित महिला, या पेशेवर ऐसा सोचते हैं कि करियर को आगे ले जाने के लिए तांत्रिक पूजा करें। यदि आप करते भी हैं, तो उन्हें छिपाया जाना चाहिए। वशीकरण नाम की कोई चीज थी, जो मैंने की थी। एक्ट्रेस ने आगे बताया, दिल्ली में पुजारी थे, उन्होंने मुझे उस व्यक्ति के बारे में सोचने के लिए कहा, या उस व्यक्ति से जुड़ी कोई चीज लाने के लिए कहा जिसमें मैं कंट्रोल करना चाहती थीं। तो मैंने बहुत कुछ किया। लेकिन इससे मुझे कुछ भी मदद नहीं मिली। मुझे यह डर था कि अगर मैं किसी को, या मेरी मां को कुछ भी बता दूं कि, मैंने अपना करियर बचाने के लिए वशीकरण किया और इससे मुझे कोई फायदा नहीं हुआ, तो लोग मेरा मजाक उड़ाएंगे। यह एक रहस्य रहा है, जो मुझे नहीं लगता कि कोई भी पेशेवर अपने करियर को ऐसे आगे बढ़ाने की कोशिश करेगा।

इस मंदिर में जाने के नाम पर ही छूट जाते हैं लोगों के पसीने

पूजा-पाठ और भूत प्रेत से छुटकारा पाने के लिए लोग मंदिर जाते हैं लेकिन हमारे देश में एक ऐसा मंदिर है जिसमें जाने से लोग कतराते हैं। कहा जाता है कि मंदिर के अंदर जाने पर भूतों और पिशाचों को डरने लगता है, लेकिन यह मंदिर ऐसा है जहां जाने से उल्टा लोग ही डर जाते हैं। दरअसल, हिमाचल प्रदेश के चंबा में एक छोटे से कस्बे भरमोर में एक मंदिर है। ये मंदिर देखने में तो काफी छोटा है, लेकिन इसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि लोग इस मंदिर के अंदर जाने की गलती कभी नहीं करते है। और भक्त मंदिर के बाहर से ही प्रार्थना कर चले जाते हैं। दरअसल, यह मंदिर मृत्यु के देवता यमराज का है। यही वजह है कि लोग इस मंदिर के पास जाने से भी डरते हैं। यह दुनिया का एकमात्र ऐसा मंदिर है जो यमराज को समर्पित है। लोगों का कहना है कि इस मंदिर को यमराज के लिए ही बनाया गया था। इसलिए इसके अंदर उनके अलावा और कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता है। गांव के लोगों का कहना है कि इस मंदिर में चित्रगुप्त के लिए भी एक कमरा बनाया गया है, जिसमें वो इंसानों के अच्छे-बुरे कामों का लेखा-जोखा एक किताब में रखते हैं। ऐसा माना जाता है कि, मनुष्यों की मृत्यु के बाद, पृथ्वी पर उनके द्वारा किए गये कार्यों के आधार पर उनके लिए स्वर्ग या नर्क का निर्णय लेने का अधिकार चित्रगुप्त के ही पास है यानी भगवान चित्रगुप्त ही मृत्यु के बाद इंसान के स्वर्ग या नरक में जाने का निर्णय लेते हैं। कहा जाता है कि इस मंदिर के अंदर चार छिपे हुए दरवाजे हैं जो कि सोने, चांदी, तांबे और लोहे के बने हुए हैं। माना जाता है कि जो लोग ज्यादा पाप करते हैं, उनकी आत्मा लोहे के गेट से अंदर जाती है और जिसने पुण्य किया हो, उसकी आत्मा सोने के गेट के अंदर जाती है।

अजब-गजब | काम नहीं कर पाने की अवस्था में देना पड़ता है जुर्माना

चंद पैसों की खातिर कोख की कुर्बानी देती हैं यहां की महिलाएं

एक ओर तो सरकारें विकास के बड़े-बड़े वादे करती है तो दूसरी तरफ गरीबी के थपेड़े झेलते आम लोगों को दो शाम की रोटी भी मुश्किल से मिल पाती है। हमारे देश में ऐसा भी जगह भी है जहां मेहनत-मजदूरी करने वाली महिलाओं को थोड़े से पैसे के लिए अपनी कोख की कुर्बानी देनी पड़ती है। इसके अलावा पीरियड्स के दौरान अगर महिलाएं काम नहीं कर पातीं तो उनसे 500 रूपये प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना वसूला जाता है। वैसे तो पूरे देश में किसान-मजदूरों के आर्थिक हालात अच्छे नहीं हैं लेकिन महाराष्ट्र में सूखे के मार और कर्ज से दबे किसान आत्महत्या तक करने को मजबूर हैं। जबकि इस वर्ग की महिलाओं के हालात और अधिक खराब हैं। महाराष्ट्र के मराठवाडा क्षेत्र के बीड जिले का कई गांव ऐसा है जहां की अधिकांश महिलाएं बिना कोख के हैं।

देनी पड़ती है कोख की कुर्बानी

पीरियड्स की वजह से महिलाओं को 2-3 दिन की छुट्टी लेनी पड़ती है जिससे काम प्रभावित होता है। इन मजदूरों को ठेकेदार के अंदर काम करना होता है एक तय समय में निर्धारित काम खत्म करना होता है। ऐसे में ठेकेदार नहीं चाहते हैं कि गन्ना काटने के दौरान किसी महिला को पीरियड हो कई ठेकेदार पैसे काट लें।

लग जाता है जुर्माना

ठेकेदार महिला और पुरुष को एक यूनिट मानकर एक निश्चित मात्रा में गन्ना काटने का काम देते हैं और अगर महिला और पुरुष में से किसी ने भी एक दिन की छुट्टी ली, तो उनसे 500 प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना लिया जाता है. माहवारी से बचने के लिए महिलाओं के सर्जरी कराने की वजह से उन्हें कई सारी बीमारियों और समस्याओं से जूझना पड़ता है लेकिन रोटी के लिए ये सब करना पड़ता है।

ट्रक ने बाइक को मारी टक्कर पिता-पुत्र समेत तीन की मौत

» मृतकों में एक बच्चा भी शामिल, रिश्तेदारी जा रहे थे बाइक सवार

» बलिया में परिवार के तीन लोगों की मौत से मचा कोहराम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बलिया। सिकंदरपुर थाना क्षेत्र के नवरतनपुर चट्टी के समीप आज सुबह ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में मोटरसाइकिल पर सवार एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत हो गई। हादसे के बाद परिवार में कोहराम मच गया। सूचना पर परिजन मौके पर पहुंचे और उनका रो रोकर बुरा हाल हो गया। मौके पर मौजूद लोगों के अनुसार हादसे के बाद मोटरसाइकिल के परखच्चे उड़ गए। मृतकों में एक बालक भी शामिल है। सूचना पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और मामले की जांच-पड़ताल की।

मुख्यमंत्री ने जतायी शोक संवेदना

जानकारी के मुताबिक मिल्की मोहल्ला निवासी मनोज कुमार (35) पुत्र गंगा सागर राजभर अपने भतीजे रोहित (16) व अपने पुत्र आलोक (5) के साथ बाइक से रिश्तेदारी मटूरी जा रहे थे। अभी वह नवरतनपुर चट्टी के समीप पहुंचे ही थे कि बेल्थरारोड की तरफ से आ रही ट्रक ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर से बाइक दूर जा गिरी। तीनों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। दुर्घटना की जानकारी मिलते ही प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार यादव मौके पर पहुंचे और तीनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए बलिया भेज दिया। एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत एक साथ होने की सूचना इलाके में फैल गयी। परिवार में कोहराम मच गया। स्वजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। वहीं हादसे की जानकारी होने के बाद प्रशासन की ओर से सीएम कार्यालय को भी इस बाबत सूचना दी गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बलिया के सिकंदरपुर थाना क्षेत्र में हुई एक सड़क दुर्घटना में तीन लोगों की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

मुरादाबाद : छात्रा ने फंदे पर झूलकर की खुदकुशी

» मानसिक रूप से परेशान थी छात्रा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुरादाबाद। सिविल लाइंस थाना क्षेत्र में एक छात्रा ने फांसी के फंदे में झूलकर खुदकुशी कर ली। स्वजन ने पुलिस को सूचना देने के साथ छात्रा को फंदे से उतारकर निजी अस्पताल ले गए। डॉक्टरों ने जांच के बाद छात्रा को मृत घोषित कर दिया। छात्रा के पिता की एक वर्ष पहले हार्टअटैक से मौत हो गई थी। इसके बाद से छात्रा मानसिक रूप से परेशान रहती थी।

संभल जनपद के असमोली थाना क्षेत्र के टांडा कोठी गांव निवासी सरदार सिंह की एक साल पूर्व हार्टअटैक से मौत हो गई थी। उनकी पत्नी हीरावती अपने तीन बच्चों प्रगति, शैलेष कुमार और ललित के साथ सिविल लाइंस थाना क्षेत्र के गांव मोरा की मिलक गांव में किराए पर कमरा लेकर रहने लगी थी। हीरावती का बड़ा बेटा शैलेष पीतल फर्म में काम करते हैं। छोटा बेटा ललित और बेटी प्रगति पढ़ाई करते हैं। प्रगति कक्षा दस की छात्रा थी। अचानक पिता की मौत के बाद से प्रगति मानसिक रूप से बीमार रहने लगी थी। इस दौरान वह अक्सर पापा के पास जाने की बात कहती थी। रविवार को घर के सभी सदस्य काम पर गए थे। रविवार दोपहर करीब साढ़े चार बजे उसने दुपट्टे का फंदा बनाकर पंखे से फांसी के फंदे से झूल गई। पोस्टमार्टम में छात्रा की मौत का कारण हैंगिंग बताया गया।

मुख्तार अंसारी के एंबुलेंस प्रकरण में डॉ. अलका राय गिरफ्तार

» बाराबंकी पुलिस ने की कार्रवाई, गैंगस्टर एक्ट में मुकदमा दर्ज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मऊ। बांदा जेल में बंद मुख्तार अंसारी को लेकर चर्चा में रही एंबुलेंस के मालिकाना हक और खरीद - फरोख्त के अलावा मुख्तार से संपर्क मामले में बाराबंकी पुलिस की जांच के केंद्र में मऊ जिला रहा है। पूर्व में भी अलका राय से पूछताछ हो चुकी है। अब दोबारा मुख्तार अंसारी के मामले को लेकर मऊ की डॉ. अलका राय को आज सुबह बाराबंकी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और अपने साथ लेकर टीम रवाना हो गई।

मुख्तार अंसारी के बहुचर्चित एंबुलेंस प्रकरण में अलका राय और अस्पताल संचालक दोनों ही आरोपी हैं। श्याम संजीवनी हास्पिटल पर कार्रवाई कर सोमवार की दोपहर ही निदेशक को पुलिस ने हिरासत में ले लिया था। आज भोर में श्याम संजीवनी अस्पताल स्थित आवास पर पहुंची पुलिस ने अलका राय को भी हिरासत में ले लिया। बाराबंकी एंबुलेंस प्रकरण में अस्पताल की संचालिका डॉ. अलका राय व निदेशक शेषनाथ राय को लगभग दस माह पूर्व गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद इन्हें जेल भेज दिया गया था। लगभग आठ माह तक बाराबंकी जेल में बंद थीं। इसके बाद लगभग ढाई माह पूर्व दोनों लोग जमानत पर छूट कर बाहर आए थे। सोमवार को एंबुलेंस प्रकरण में माफिया मुख्तार अंसारी, डॉ. अलका राय व शेषनाथ राय सहित 13 लोगों पर गैंगस्टर एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था।

मायके से नहीं आयी पत्नी तो दामाद ने ससुराल में रख दिया बम

» धमाके से दरवाजे-खिड़कियां क्षतिग्रस्त इलाके में दहशत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

आगरा। जनपद के थाना डौकी क्षेत्र के झारपुरा गांव में कल एक मकान में जोरदार धमाका होने से दहशत फैल गई। धमाके से घर के दरवाजे और खिड़कियां क्षतिग्रस्त हो गईं। मकान मालिक ने अपने दामाद पर बम रखने का आरोप लगाया है। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी है।

थानाध्यक्ष डौकी बहादुर सिंह ने बताया कि झारपुर निवासी लाखन सिंह के घर में जोरदार धमाका हुआ था। धमाके की आवाज से घरवाले चीखते-चिल्लाते बाहर भागे। गांव में भी अफरातफरी मच गई थी। सूचना मिलते ही पुलिस अधीक्षक ग्रामीण पूर्वी सोमेंद्र मीणा, सीओ सौरभ कुमार पहुंचे। घटना की जानकारी ली। इस मामले में गृहस्वामी लाखन सिंह ने अपने दामाद हरी सिंह निवासी कच्ची सराय, ताजगंज पर घर में बम रखने का आरोप लगाया है। पीड़ित ने पुलिस को बताया कि दामाद अपराधी किस्म का है। जिससे परेशान होकर पुत्री एक साल से मायके में रह रही है। इसे लेकर दामाद काफी दिनों से धमकी दे रहा था। पुलिस ने लाखन सिंह की तहरीर पर हरि सिंह के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। एसओ ने बताया कि आरोपी की तलाश की जा रही है। बताया गया है कि रविवार को हरी सिंह पत्नी को बुलाने सुसराल आया था लेकिन पत्नी ने उसके साथ जाने से इंकार कर दिया। इसी खुन्नस में पति ने रात में किसी वक्त सुतली बम घर में रख दिया और जलती अगरबत्ती उसमें लगा दी। सुबह तड़के उसमें धमाका हो गया।

दो करोड़ की ब्राउन शुगर समेत दो तस्कर गिरफ्तार

लखनऊ। एसटीएफ ने सोमवार को चिनहट इलाके में नौबस्ता कला से दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। दोनों के पास से करीब दो करोड़ की ब्राउन शुगर, ढाई लाख रुपये, मोबाइल और बाइक बरामद की है। दोनों नेपाल से ब्राउन शुगर लाकर लखनऊ और आस पड़ोस के जिलों में दोगुने दामों पर बेचते थे। एसटीएफ के डिप्टी एसपी सत्यसेन के मुताबिक, गिरफ्तार तस्करों में बाराबंकी के रामनगर का जान मोहम्मद और बराइच दरगाह का अकबर अली है। दोनों नेपाल से सस्ते दाम पर ब्राउन शुगर लेकर आते थे और उसे लखनऊ और पड़ोस के जिलों में बेचते थे।

अब वर्षों से एक ही जिले में तैनात बाबुओं पर टेढ़ी हुई स्वास्थ्य विभाग की नजर

» सात साल से अधिक समय से तैनात क्लर्कों को चिन्हित करने के आदेश

» सूची तैयार होने के बाद जल्द किया जाएगा तबादला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कई सालों से एक ही जिले में तैनात क्लर्कों पर अब स्वास्थ्य विभाग की नजर टेढ़ी हो गयी है। सात साल से अधिक समय से तैनात बाबुओं का तबादला किया जाएगा। विभाग ने इसके निर्देश जारी कर दिए हैं। इससे महकमे में हड़कंप मचा है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत ऐसे लिपिक जो एक जिले में सात साल से अधिक समय से तैनात हैं,

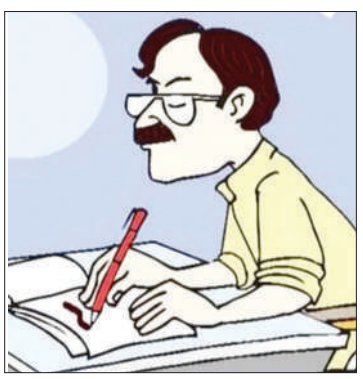

उनका तबादला किया जाएगा। स्वास्थ्य विभाग के निदेशक (प्रशासन) डा.राजागणपति आर की ओर से सोमवार को सभी मंडलीय अपर निदेशक , अस्पतालों के निदेशक व मुख्य चिकित्सा अधिक्षकों को निर्देश जारी किए गए हैं कि ऐसे लिपिकों को चिन्हित करें और उनका ब्योरा विभाग को तीन दिन में भेजें। वर्ष 2022-23 में स्थानांतरण किए जाने की तैयारियां तेज कर दी गई हैं।

स्थानांतरण नीति के अनुसार कार्यालय में एक पटल पर तीन साल, एक कार्यालय में पांच वर्ष और मंडल में 10 साल से अधिक लिपिक तैनात नहीं रह सकते। वहीं मान्यता प्राप्त सेवा संघों के प्रदेश के साथ-साथ जिलों के अध्यक्ष व सचिव का स्थानांतरण उनके द्वारा संगठन में पद पर नियुक्त होने के दो वर्ष तक नहीं किया जाएगा। इसके बाद इनका भी स्थानांतरण होगा। तीन दिन के अंदर सभी क्लर्कों की तैनाती से संबंधित रिपोर्ट विभाग को भेजनी होगी।

युवक की हत्या से सनसनी खून से लथपथ मिला शव

» कानपुर में कुल्हाड़ी से किया गया मर्डर, पुलिस कर रही मामले की जांच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। महाराजपुर थाना क्षेत्र के नर्वल में युवक की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी गई। युवक का रक्तरंजित शव गांव से बाहर पड़ा मिला। नर्वल पुलिस ने मौके पर पहुंचकर छानबीन की और फोरेंसिक टीम को जांच के लिए बुलाया गया। सोमवार सुबह युवक घर से मजदूरी करने जाने की बात कहकर निकला था।

नर्वल के ग्राम रोशनपुर निवासी 30 वर्षीय छोटे कोरी मजदूरी करता था। सोमवार सुबह छोटे घर से मजदूरी करने जाने की बात कहकर निकला था। छोटे का काम सेमरुवा में चल रहा था। देर शाम छोटे

जब घर नहीं पहुंचा तो स्वजनों ने खोजबीन की लेकिन वह नहीं मिला। आज पाली-सवायजपुर मार्ग पर स्थित बंबा के किनारे सड़क के बीच छोटे का रक्तरंजित शव पड़ा मिला। नर्वल पुलिस मौके पर पहुंच गई और शव के पास से कुल्हाड़ी बरामद की है। इससे प्रतीत होता है कि युवक की हत्या कुल्हाड़ी से की गई है। अंदेशा जताया जा रहा है कि कहीं और हत्या के बाद शव यहां लाकर फेंक दिया गया है।

सत्ता और विपक्ष लोकतंत्र के दो पहिए : योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सतीश महाना के स्पीकर चुने जाने पर दी बधाई, नवनिर्वाचित विधायकों को भी दिया संदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अपने दूसरे कार्यकाल में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद योगी आदित्यनाथ ने आज सदन को संबोधित किया। भाजपा के वरिष्ठ नेता सतीश महाना को यूपी विधानसभा का अध्यक्ष चुना गया है। उन्हें प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बधाई देते हुए सदन को संबोधित करते हुए कहा कि आज पूरे देश की नजर यूपी विधानसभा पर है। ऐसे में लोकतंत्र को मजबूत बनाना सबकी जिम्मेदारी है। इस सदन के चुने गए सदस्यों से अनुरोध है कि वे सदन की गरिमा बनाए रखे।

मुख्यमंत्री ने कहा सदन की उच्च मर्यादा आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कोरोना संकट में भी सदन नहीं रूका। विकास के पथ पर यह सरकार प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने सतीश महाना की भूरि-भूरि प्रशंसा की। पिछली सरकार में किए गए उनके कार्यों की सराहना की। मुख्यमंत्री ने कहा सत्ता व विपक्ष लोकतंत्र के दो पहिए है। साथ मिलकर यूपी को आगे बढ़ाएंगे। जनता के विश्वास से मजबूत मिलती है। यूपी नई पहचान के साथ उभरा है। यूपी की भूमिका देश में सबसे बड़ी हो, इसके प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने कहा हमने चुनाव के दौरान देखा कि नेताओं ने एक दूसरे पर खूब आरोप-प्रत्यारोप किए। हम कह सकते हैं कि जनता कभी भी नकारात्मकता को स्वीकार नहीं करती है। हमेशा प्रगतिशील सोच को स्थान देती है। जो सकारात्मक होगा वो अंगीकार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अब हमें यूपी के विकास पर सोचना है। युवाओं के बारे में सोचना है। महिलाओं के बारे में सोचना है। मुझे पूरा विश्वास है कि उत्तर प्रदेश उन सारी उम्मीदों को पूरा कर सकता है जो देश की जनता करती है। मुख्यमंत्री ने विधानसभा अध्यक्ष की प्रशंसा करते हुए कहा कि आपका आठवीं बार विधायक के रूप में चुना जाना एक बड़ी बात है। जो कि आपके द्वारा किए गए जन कार्यों को दिखाता है। आपने औद्योगिक विकास मंत्री रहते हुए निवेश के करीब साढ़े तीन लाख प्रस्तावों को जमीन पर उतारने में परिश्रम किया। इस पद पर चुने जाने के लिए आपको बधाई और शुभकामनाएं। मुख्यमंत्री ने सभी विधायकों को भी चुने जाने के लिए बधाई दी। सोमवार को पहले सदन के नेता मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शपथ ली। इसके बाद अखिलेश यादव ने नेता प्रतिपक्ष के तौर पर शपथ ली।

फोटो: सुमित कुमार

नेता प्रतिपक्ष ने की महाना की तारीफ

जितना विपक्ष को देंगे मौका उतना मजबूत होगा लोकतंत्र : अखिलेश

लखनऊ। 18वीं विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना को बधाई देते हुए कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने की परंपरा जो चली, वह आज कायम है। अखिलेश ने कहा महान विभूतियों ने इस आसन को संभाला तो आप भी इस सदन के दायित्वों का निर्वहन करेंगे, ऐसी पूरी उम्मीद है हमें। अखिलेश ने कहा समय-समय पर आपके संरक्षण की जरूरत पड़ेगी, इसलिए लेफ्ट का भी ध्यान रखना है। उन्होंने कहा कि यह एक बड़ी जिम्मेदारी है। हमें उम्मीद है कि जब विपक्ष के लोग सवाल उठाएंगे तो आप उन्हें पूरा मौका देंगे। आप राइट से चुनकर आए हैं मगर अब आपको लेफ्ट की तरफ देखना होगा। आप रेफरी हैं तो उम्मीद है कि आप कभी खेल का हिस्सा नहीं बन जाएंगे। अखिलेश यादव ने कहा कि आप जितना विपक्ष को मौका देंगे लोकतंत्र उतना मजबूत होगा। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी पर बात-बात में निशाना साधा, कहा अगर वो विदेश गए होते तो उत्तर प्रदेश और तरक्की करता। अपने विदेश दौरे को लेकर उन्होंने सरकार पर कई तीर चलाए। साथ ही कानून व्यवस्था पर भी जोरदार हमला किया।

राज्य सभा में कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास का प्रस्ताव दिया तो भाग खड़े हुए भाजपाई : संजय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल के बाद अब उनकी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने भी फिल्म दि कश्मीर फाइल्स को यूट्यूब और दूरदर्शन पर फ्री में दिखाए जाने की मांग की है। आप सांसद संजय सिंह ने राज्यसभा में शून्यकाल देते हुए फिल्म को दूरदर्शन और यूट्यूब पर फ्री में दिखाने की मांग की।

संजय सिंह ने कहा कि सभी सांसदों को अपनी सांसद निधि के 5 करोड़ रुपए कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास के लिए देनी चाहिए। सिंह ने कहा कि यह प्रस्ताव उन्होंने सदन में रखा है, उस दिन से भाजपाई भाग रहे हैं। भाजपा के लोग जवाब नहीं दे रहे हैं। क्या कश्मीरी पंडितों के दर्द के नाम पर केवल करोड़ों रु की कमाई करनी है और काम कुछ नहीं करना है। संजय सिंह ने कहा कि कश्मीरी पंडितों के टीचर्स को स्थाई करने का काम केजरीवाल सरकार ने किया, 1993 से 1998 में भाजपा ने कुछ नहीं किया, 1998 से 2013.. कांग्रेस ने 15 सालों तक कुछ नहीं किया, कश्मीरी पंडितों के हित में काम केजरीवाल सरकार ने किया लेकिन हम इसका प्रचार नहीं करते हैं। ये लोग ड्रामे कर रहे हैं, उनके लिए काम नहीं कर रहे हैं। संजय सिंह ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि कश्मीरी पंडितों की चिंता होती तो पीएम मोदी उनके पुनर्वास के लिए 7-8 सालों में कुछ तो करते। संजय सिंह ने सवाल किया कि कश्मीरी पंडितों के लिए क्या किया है सरकार ने, ये तो बताएं।

भाजपा के लोग नहीं दे रहे हैं जवाब

यूपी में दो अप्रैल से चलेगा सदस्यता अभियान

लखनऊ। आम आदमी पार्टी उत्तर प्रदेश में भी पांव पसारने को लालायित है। संगठन को मजबूत बनाकर पार्टी की नीतियों को घर-घर पहुंचाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। प्रदेश में दो अप्रैल से पार्टी सदस्यता अभियान शुरू करेगी। प्रदेश कार्यालय में राज्य सभा सदस्य और यूपी प्रभारी संजय सिंह की अध्यक्षता में दो दिवसीय कार्यकारिणी की समीक्षा बैठक में ये निर्णय लिया गया। लखनऊ में प्रदेश कार्यकारिणी की समीक्षा बैठक के दूसरे दिन आप के प्रदेश प्रभारी संजय सिंह ने कहा कि पार्टी नगर निगम चुनाव को लेकर अभी से तैयारी में जुट जाए। दो अप्रैल से प्रदेश में संगठन को मजबूत करने के लिए सदस्यता अभियान शुरू किया जाएगा। जल्द ही संगठन विस्तार के लिए बड़े निर्णय लिए जाएंगे। भविष्य में किस तरह से पार्टी की नीतियों को घर-घर तक पहुंचाया जाए इस पर भी मंथन हुआ। नगर निगम चुनाव कैसे लड़ना है और क्या रणनीति रहेगी इस पर संगठन के नेताओं ने अपनी राय रखी। आप नेता संजय सिंह ने कहा कि एक-एक कार्यकर्ता को जिम्मेदारी लेनी होगी। संगठन से लोग जुड़ना चाहते हैं और उनको पार्टी से जोड़ने का अभियान भी तेज किया जाएगा। विधानसभा चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों को भी विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी गईं। प्रदेश प्रभारी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर विकल्प बनकर उभर रही है। यूपी में प्रमुख विपक्षी दल की भूमिका को निभाएंगे।

डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने संभाला कामकाज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में 18वीं विधानसभा के गठन की प्रक्रिया में नवविर्वाचित विधायकों को शपथ दिलाई जा रही है। सोमवार से प्रारंभ शपथ ग्रहण का कार्यक्रम आज दूसरे दिन भी जारी है। विधान भवन में सुरेश कुमार खन्ना ने आज नवनिर्वाचित विधायकों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा नेता विरोधी दल अखिलेश यादव ने कल ही शपथ ली थी। वहीं इसके दूसरी ओर कल शपथ ले चुके कई मंत्रियों व विधायकों ने कामकाज संभाल लिया है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कामकाज संभालने के दौरान विधानसभा स्थित कार्यालय पर बैठक की।

बता दें कि पाठक को स्वास्थ्य विभाग का जिम्मा मिला है। वहीं कार्यालय पर मंत्री शिव प्रताप शाही को पुष्प देख कर अधिकरियों ने स्वागत किया। साथ ही कई अन्य मंत्रियों ने भी अपनी कुर्सी संभाली।

धरने पर बैठे राकेश टिकैत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मुजफ्फरनगर में देर रात जिला अस्पताल में भाकियू कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिए जाने के विरोध में चौधरी राकेश टिकैत नगर कोतवाली में धरने पर बैठ गए हैं। टिकैत का कहना है कि पुलिस ने गलत तरीके से कार्रवाई की है। सोमवार देर रात शहर के प्रकाश चौक स्थित होटल पर तितावी के दो ग्रामीणों और होटल मालिक के बेटों के बीच मारपीट हो गई थी।

पुलिस दोनों पक्षों को जिला अस्पताल लेकर पहुंची। ग्रामीणों ने भाकियू कार्यकर्ताओं को कॉल कर मौके पर बुला लिया। दोनों पक्षों के बीच जिला अस्पताल में भी मारपीट हो गई थी। भाकियू कार्यकर्ता तितावी के दोनों ग्रामीणों को अपने साथ ले गए थे। इस प्रकरण में पुलिस ने 11 ग्रामीणों को हिरासत में लिया है। भाकियू प्रवक्ता चौधरी राकेश टिकैत मंगलवार सुबह नगर कोतवाली पहुंचे, उन्होंने ग्रामीणों के खिलाफ गलत कार्रवाई का आरोप लगाया। पुलिस ने जांच करने की बात कही।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।